ISBN Number: 978-93-342-8247-4 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४१७ म अकं ०१ मई २०२५ (वर्ष १८ मास २०९ अकं ४१७)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]

विदेह मथिली साहित्य आन्दोलन: मानषुीमिह सस्ंकृताम ्

विदेह- प्रथम मथैिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२५. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२५. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 417 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

पद्य



१.१.अंक ४१६ पर टिप्पणी

प्रणव कुमार झा

यद्यपि अखनो समाज मे स्त्रीक जीवन कथा व्यथा पुरुष सं बेसिए करुण, विडंबनापूर्ण आ संघर्ष से भरल छैक मुदा अखुनका समय मे परिवार आ समाज मे पुरुषक कथा व्यथा सेहो कम नै छैक। एकर बहुत रास कारण भऽ सकय अछि जै मे से एकटा सामाजिक-सांस्कृतिक अपक्षय, समिश्रण, रिश्ता-नाता के तानाबाना मे कमी आदि छैक। जेना हम सेकेन्डरी क्लास मे पढ़ने रही जे परिवार के सबसे महत्वपूर्ण गुण की छैक? जेकर उत्तर मे रटाओल जाय छल 'सहिष्णुता'। एकर कमी परिवार आ रिश्ता मे बहुत रास परेशानी के कारण बनि रहल छैक। डॉ. जियाउर रहमान जाफरी एहि बात के 'पुरुषक समस्या' नाम के अपन कविता के द्वारा उठेबा के प्रयास केलाह अछि। "पुरुषक समस्या" कविता पुरुषक अन्तर्मनक एकाकीपन, सामाजिक अपेक्षाक बोझ आ अस्तित्वक संकट कैँ मार्मिक ढंग सँ अभिव्यक्त करैत अछि। ई कविता मात्र पुरुषक पीड़ा नहि, बल्कि एक सम्पूर्ण पितृसत्तात्मक समाजक विद्रूप चित्र सेहो प्रस्तुत करैत अछि जाहि मे पुरुष कैँ सदिखन "बलवान", "निर्णायक" आ "उत्तरदायी" मानि कऽ ओकर भावनात्मक पक्ष कैँ नगण्य मानल जाइत अछि।

कविता पुरुष पात्रक माध्यम सँ एकटा घरक अदृश्य तनाव, पारिवारिक कर्तव्यबोध आ कानूनी-सामाजिक दबाव कैँ चित्रित करैत अछि। एक दिस ओ माँ कैँ संतोष नहि दऽ सकैत अछि, जे पुतहुक आगमन कैँ बेटा सँ दूरी मानि छथि; दोसर दिस, पत्नी सँ सम्बन्ध बिगड़ल रहैत अछि, मुदा सामाजिक-नैतिक भय सँ ओ सम्बन्ध छोड़ि नहि सकैत अछि। जेना कोरोना के सेकेंड वेब के बाद साइत एहन कियौ ने बचल रहलाह जकर जानकारी मे एकरा से

प्रभावित कोनो लोक नै होई, तहिना आई समाज ऐ विचित्र परिस्थिति मे पहुँच गेल अछि जे, सबहक लागि-भागि मे ऐ तरहक व्यथित स्थिति देखबा मे आबि रहल अछि। ताहि लेल आब ई समस्या पर विचार त करहे पड़त। मुदा एकर मतलब ई मानि लेनाई कथमपि नै छैक जे समाजक सभटा बोझ पुरुषे पर आबि गेल आ स्त्री लोक के कोनो समस्ये नहि छैक। वास्तव मे हितक टकराहट से ऐ प्रकार के जटिल समस्या बिना कोनो खास कारण के दुनु दिस से उत्पन्न भऽ रहल अछि। ऐ तरहक समस्या के उन्मूलन समाज मे पारिवारिक, वैचारिक आ सांस्कृतिक मूल्य के उत्थान आ परिवार मे नव पीढ़ी मे पारिवारिक मूल्य आ संस्कार बनेने बिना संभव नै।

कविताक भाषा सहज आ स्पष्ट अछि, मुदा ओकर सहजता मे दुख दर्द नुकायल अछि। कवि कोनो अलंकारिक या विशेष प्रतीकात्मकता सँ कविता कैँ जटिल नहि बनेने छथि, मुदा सामाजिक यथार्थ अपन सम्पूर्ण तीव्रता सँ पाठक के समानेराखि दैत अछि।

"चिता के टुकड़ा भ जायत" एह पंक्ति मे आत्महत्या या मानसिक ध्वस्तता केर संकेत छैक, जे बतबैत अछि जे पुरुषक संघर्ष मात्र बाहरी नहि, अपितु मानसिक स्तर पर गहिर छैक।

कविताक अंतिम पंक्ति "हम एक व्यक्ति छी मुदा हम कतेको मे रहैत छी" - एहि मे काव्यक सार निहित अछि।

एहि अंक मे सामाग्री कम प्रकाशित भेलैक अछि। गद्य आ पद्य दुनु आधारित खंड बहुत संक्षिप्त छल। एहि कारणें एकटा अधूरापन महसूस भेल।हम बुझैत छी जे कोनो अंक निकालब अनेक व्यावहारिक कठिनाइ सँ गुजरि कऽ संभव होइत अछि, मुदा आशा करैत छी जे आगामी अंक मे सामग्रीक विविधता आ

संख्या दूनू मे संतुलन रहत।

-प्रणव कुमार झा , नई दिल्ली

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-८



कल्पना झा

मथिली साहित्यम ेउपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एव ंहुनक परिवारक योगदान-८

मिथिलाक सरल सस्ंकृति ओ अग्रगामी परम्पराक सच्चा सवांहक : 'व्यास' जी

रिटायरमेंट काल 'चीफ इंजीनियर' छलाह 'व्यास' जी। माने सरकारी विभाग मे एकटा उच्च पदस्थ अधिकारी। इंजीनियर सँ चीफ इंजीनियर धरि पहुँचैत, सभ दिन सभ तरहक सरकारी सुविधा सँ लैस रहलाह अपन कार्यकाल मे। गाड़ी-घोड़ा सँ ल' क' चौबीस घंटा जी-हजूरी मे लागल स्टाफ पर्यन्त। मुदा एतेक सुविधा-सम्पन्न जीवन रहितो पैर सदिखन धरती पर रहलनि। आ से तेहन जबरदस्त तरीका सँ पैर रोपने रहलाह धरती पर जे दुनियाँ क्षुब्ध रहि जाए हुनकर अपन परम्परा कैँ गसिया क' धएने रहबाक 'ऐटिट्यूड' देखि। जतए कत्तहु पोस्टिंग रहलनि; सभ ठाम ओ अपन पारम्परिक खान-पान सँ ल' क' पारम्परिक पहिरन-ओढ़न, पाबनि-तिहार, विध-व्यवहार, गीत-नाद, सभ किछु अपनौने रहलाह। संगहि अपन हीत-मीत कैँ सेहो प्रेरित करैत

रहलाह; अपन सभ्यता-संस्कृति-परम्परा कैँ अक्षुण्ण राखबा लेल। राँची रहथि, कि गया, आ कि मुजफ्फरपुर-पटना, सभ ठाम एकटा छोट की पैघ; जेहन संभव रहलनि तेहन, अप्पन मैथिल समाज बना लेल करथि 'व्यास' जी। पाबनि-तिहार सँ ल' क' अनदिनाँ सेहो; ई मैथिल समाज सभ ठाम हिनकर संग पूरैत रहलनि। चाह-पानक दौर चलैत रहैत छल आ ताहि संग गप्पक दौर सहजहि। चाहे ओ सरकारी क्वार्टर मे रहलाह किंवा अपन पटना स्थित आवास 'श्री भवन' मे। पटनाक रौनक तँ किछु-किछु हमरा अपनहुँ देखल-सुनल अछि। जएह कहियो काल एनाइ-गेनाइ रहल; ताही क्रम मे। 'व्यास' जीक देहावसानक उपरान्त जेना ओहि घरक 'श्री' बिला गेल कतहु....। एकदम सुन्न-मसान ! रोग-क्लेश-दु:खक प्रकोप बढ़ए लागल आस्ते आस्ते। नानी अमरावती देवी 'व्यास' जीक देहावसानक सात बरख उपरान्तहु रहलीह मुदा 'ओ' रौनक नहि रहल कत्तहु ! एक्कहु रत्ती नहि रहल !

अप्पन मिथिलाक संस्कृति, अप्पन परम्परा बड़ विशिष्ट रहल अछि। ओना संसारक सभ समाजक रहन-सहनक अपन-अपन विशेष तौर-तरीका रहिते आएल छैक सभ दिन सँ। आ इएह विशेष तौर-तरीका समाजक लोक कैँ एक संग बान्हि क' राखैत रहल अछि। ई परम्परा गतिशील होइत अछि, माने समयक संग बदलैत रहल अछि।

कोनो समाजक सभ्यता-संस्कृति एकटा जटिल प्रणालीए सन बुझू ! कोनो समाजक, हरेक सदस्य एक-दोसराक संग ज्ञान, विश्वास, कला, इत्यादि सभ किछु समान रूपेँ दीर्घकाल सँ साझा करैत रहल होइथ; आ तकरा वर्तमान पीढ़ी फॉलो करैत अगिला पीढ़ी धरि ट्रांसफर करथि, इएह भेल संस्कृतिक महत्व ! एही तरहेँ कोनो समाजक संस्कृति अक्षुण्ण राखल जाइत रहल अछि; समाजक एक-एक इकाइ द्वारा। आ एही तरहेँ समाजेक लोक सभक

बनाओल; वंशानुगत आबि रहल अप्पन नियम-कानून, नैतिकता, रीति-रिवाज, आ अन्यान्य सीखल व्यवहार सभ, समाजक हरेक व्यक्ति कैँ एक-दोसरा सँ जोड़बाक काज करैत रहल अछि अदौ काल सँ। माने इएह ओ प्रणाली अछि, जे कोनो समाजक लोक कैँ एक संग बान्हबाक काज करैत अछि। आ सएह लोक कैँ लोक सँ बान्हबाक काज 'व्यास' जी आजीवन करैत रहलाह। व्यावहारिक रूपैँ दिनानुदिनक गतिविधिक माध्यम सँ सेहो आ अपन लेखनीक माध्यम सँ सेहो।

आ परम्पराक गप्प करी तँ लौकिक आ वैदिक, दुनू परम्पराक समान रूप सँ निर्वहन करैत आएल अछि मैथिल समाज। ओना मूलतः लौकिक परम्पराक अनुसरण करैत जीवन जीबैत अछि लोक। लोक द्वारा बनाओल तौर-तरीकाक अनुसरण करबाक परम्परा रहल अछि अपन मिथिला मे। वैदिक परम्परा पूजा-पाठ-यज्ञादिक निर्वहन लेल काज आबैत छैक। आबक अत्याधुनिकताक चपेट मे आएल मैथिल समाज भले ही सभ तौर-तरीकाक 'ऐसी-तैसी' क' रहलाह...खैर...एकर दुष्परिणाम आगाँ देखा पड़तनि आधुनिक लोक सभ कैँ। "अपन महीस कुड़हरिए नाथब, ताहि सँ मतलब अनका की" बला पड़ि छनि युवा पीढ़ीक। जे-से । हमरा की ! हम किछु कइए नहि सकैत छी, तँ किएक सोची किछुओ। आब बसात बेरोकटोक सन बहए लागल अछि।

विषयान्तर होएबा सँ बचैत गप्प अपन परम्पराक। कोनो समाजक एकटा अपन प्रचलित स्टाइल होइत छैक; जीवन जीबाक; माने खान-पान, पहिरन-ओढ़न, हंँसब-बाजब, नाचब-गाएब, उत्सव मनाएब, सभ किछु अप्पन तरीकाक। इएह भेल लौकिक परम्परा। इएह परम्परा हमरा सभ कैँ अपन पूर्वज सभक जीवनशैली, मान्यता आ हुनकर सिद्धान्त सँ जोड़ि क' राखैत अछि; आजीवन। इएह परम्परा हमर सभक अपन एकटा विशिष्ट पहचान सेहो दैत अछि देस-विदेस मे। संगहि अपन जन्मभूमि सँ एकटा विशेष भावनात्मक

जुड़ाव केर अनुभव करैत अछि कोनो क्षेत्र विशेषक बच्चा-बच्चा।

जेना मिथिलाक खान-पानक गप्प करी तँ एकटा अलगे वैशिष्ट्य रहल छैक एकर। अपन मिथिलाक अनेक तरहक भोजन-विन्यास मतलब 'रेसिपी' एहन अछि जे अन्यत्र नहि बनैत होएत। जेना मिथिलाक तिलकोरक तरुआ, पथरचूरक, फूलक तरुआ ! ओलक सन्ना, अरिकोंचक तीमन, रंग-रंगक माछक प्रकार...!

आ भोजनक विन्यासी 'व्यास' जी सन भेटब कठिन। बड़ सौखीन ! एकादशीक व्रत करथि तँ मखानक खीर भेले ताकए। घी मे भूजल अल्लूक चरिफक्का आ ताहि पर सँ काँच केरा उसिनि-सन्ना बनाए घी मे सेकल ओकर छोटे-छोटे सोहारी कि परठा जे बुझी, से बनले ताकए। अनूना दिन क' सेबइक खीर, अनून भुजिया, पछुआ-पू , ई सभटा 'व्यास' जीक फरमाइसी भोज्य पदार्थक व्यवस्था होइते टा छलनि।

एकर अतिरिक्त सुआद ओ शुद्धताक तेहन पारखी जे सभटा मसल्ला टटके पिसाइत छलए तरकारी तीमन लेल, सभदिनाँ। सिलौट-लोढ़ा पर हरदि, धनी, मिरचाइ, जीर-मरीच सभ किछु सभ दिन टटका-टटकी पिसाइत छलए आ तरकारी सभ मे पड़ैत छलए। जखन पिसलाहा पाउडर बला मसल्लाक चलती भ' गेल छलए, तखनो धरि 'श्री भवन'क परम्परा चलैत रहलैक सिलौट-लोढ़ा पर पीसल मसल्ला बला तरकारी बनबाक।

तहिना अदौड़ीए बनए तँ तीन रंगक। अगबे उड़ीद दालि बला। उड़ीद आ मसुरी दालि फेंटि क' आ उड़ीद, मसुरी, बूटक दालि, केराउ, सभ किछु फेंटल बला अदौड़ी सेहो बनबाबथि नानी, ई कहि जे हुनका पसिन छनि। अदौड़ीक अलावा कुम्हरौरी, चरौरी, दनौरी, मुरौरी, बिड़ियाक सौखीन। खेबाक खूब सौखीन

छलाह 'व्यास' जी। मुदा अनुशासित रहैत खाएब जानैत छलाह। असमय वा बेहिसाब बला बात नहि।

मिथिलाक पहिरन-ओढ़न सेहो शिरोधार्य रहलनि सभदिन 'व्यास' जी कैँ। पहिरन-ओढ़न केर सेहो अपन अलगे विशिष्टता रहल अछि मैथिल समाजक। धोती कुर्ता, पाग-दोपटा भद्र पुरुषक पहिरन रहल अछि अपन मिथिला मे। स्त्रीगणक लेल घोघ-मरौतक परम्परा। सीधा पल्ला लेब। ई सभटा 'श्री भवन' मे 'फॉलो' कएल जाइत रहल 'व्यास' जीक जीवन काल धरि। घर मे तँ जानिए क' ओहि घरक पुतहु सभ कैँ माथ उघारि घर सँ बहरएबाक सहास नहि छलनि। राजधानी पटनाक बोरिंग रोड चौराहा सन 'पॉश' इलाका मे एकटा मिनी मिथिला बसल छलए जेना। मुदा जेना कि पहिनहुँ कहि चुकल छी, परम्परा गतिशील होइत अछि, माने समयक संग बदलैत रहल अछि। तँ से फेर समयक संग अपन पोती सभ लेल समयानुकूल ओतेक बदलाव स्वयं केर सोच मे, अनुशासन मे आनैत देखएलाह 'व्यास' जी।

कलाक गप्प करी तँ सभ लूड़ि मे दक्ष जहिना 'व्यास' जीक माए आनन्दी देवी छलथिन; तहिना पत्नी अमरावती देवी। पूजा-पाठ, विवाह-दानक अवसर पर अरिपन देबाक लूड़ि हुअए किंवा पुरहर-पातिल रांगब ढौरब, सीकी-मौनी बूनब, स्वेटर बूनब, सिलाइ करब पर्यन्त, अमोट-अचार बनाएब, सभ किछु केर टेक कायम रखलनि ओहि घरक स्त्रीगण सभ। परम्पराक संवाहक मूल रूप सँ स्त्रीगणे होइतो छथि ओना। मुदा घरक पुरुख जँ इंटरेस्ट देखाबथि सभ पारम्परिक गतिविधि मे तँ स्त्रीगण आरो उत्साहक संग काज करैत छथि; से धरि निश्चित बात !

से तहिना 'व्यास' जी गीत-संगीत मे सेहो बेस रुचि रखनिहार लोक। पारम्परिक गीत-नाद बड़ प्रेम सँ सुनथि। आ ई गुण हम मामा सभ मे सेहो

देखने छी। कहियो कोनो काज मे प्राती वा बटगबनी सन कोनो गीतक भास आ गीतक बोल पर चर्चा करैत देखल-सुनल अछि हमरा। मतलब अपन पारम्परिक गीतक महत्व कैँ बूझब/अकानब ओहि घरक परम्परा रहल छैक।

एकटा सामान्य सनातन मैथिल जकाँ 'व्यास' जी सेहो पंचदेवोपासक छलाह। शक्तिक उपासक तँ छलथिहे, संगहि महादेव, विष्णु, गणेश आ सूर्यक उपासना सेहो बड़ श्रद्धापूर्वक करैत छलाह। दुर्गा-पूजा मे दुर्गा सप्तशतीक तेरहो अध्याय-पाठ करब, भगवतीक आराधना करब, कुमारि भोजन, हवनादि करब, संगहि चौबीसो एकादशीक व्रत, बारह टा चतुर्दशी, छओ मासक रवि केर अनूना-एकसंझा सभ किछु ठानल छलनि/करैत रहलाह बहुत दिन धरि। चौठचन्द्र पाबनि आ अनन्त चतुर्दशीक अवसर पर खूब उत्साहपूर्वक बृहत पूजाक आयोजन होइत छलए 'श्री भवन' मे। कहबाक माने आजीवन कर्मकाण्डक पक्षधर रहलाह 'व्यास' जी।

घोर कर्मकाण्डी होएब आ संगहि आधुनिकताक पक्षधर होएब, विरोधाभासी बात बुझाइत अछि ओना; मुदा ई यथार्थ अछि 'व्यास' जीक संदर्भ मे। एहने छलाह 'व्यास' जी। हुनकर सोच 'प्रोग्रेसिव' छलनि। माने समय सं ँ पाछाँ धकेलबाक प्रयास कहियो नहि कएलनि धिया-पूता कैँ। स्वेच्छा सँ जकरा जाहि क्षेत्र मे जेबाक छलैक; से जाइत गेलनि। एकटा छोट सन प्रसंग सँ स्पष्ट करब एहि बात कैँ हम। नब्बेक दशकक ई गप्प होएत प्राय: जखन दुनू छोटका बालक माने चारिम आ पाँचम नंबर मामा (मोहन जी आ सोहन जी) राति मे कनि अबेर सँ घर अएलाह तँ पिता पुछलथिन , "एतेक राति धरि कहाँ छलहुँ ?"

उतारा भेटलनि, "ओ एकटा अंग्रेजी सिनेमाक बड़ चर्चा सुनि रहल छलियैक...सएह देखए लेल गेल छलहुँहँ..!"

----"बेस ! घर मे ककरो कहि क' जेबाक चाही छलए ने..?"

बालकद्वय मूड़ी गोँतने ठाढ़ ! आब जोर सँ दबारताह पिता; ताहि आशंकाक संग।

मुदा पिता सँ डाँट-फटकार नहि भेटलनि। उन्टे पूछल गेलनि, "केहन लागल सिनेमा ?"

बालकद्वय द्वारा सिनेमाक 'रिव्यू' संतोषजनक भेटलनि। पिता आदेश देलथिन, "हमरा लेल कल्हुका टिकट ल' लेब। हमरा देखबाक अछि, आखिर एहन की नीक लागल अहाँ लोकनि केँ।"

सएह भेल। अगिला दिन 'व्यास' जी ओ सिनेमा जा क' देखि अएलाह। सिनेमाक नाम विस्मृत भ' रहल अछि एखन हमरा।

कोन बएस मे पुत्रक संग कड़ाइ करब आवश्यक आ कोन बएसक पुत्रक संग मित्रवत व्यवहार करबाक चाही, से हुनका खूब नीक जकाँ बूझल छलनि। 'व्यास' जीक व्यवहार उक्त प्रसंग मे देखि ई स्पष्ट अछि। 'पिता'क रूप मे हुनकर ई व्यवहार अनुकरणीय अछि। आदर्श पुत्र, आदर्श पति आ आदर्श पिताक संग समाजक सोझाँ सेहो सभदिन, सभठाम आदर्शे प्रस्तुत करैत रहलाह 'व्यास' जी।

'व्यास' जी केँ अपन संस्कृति, सनातन धर्म, देवता-पितर, कौलिक परम्परा आदि पर पूर्ण निष्ठा छलनि। हुनकर जीवन पर हुनक नानाक अप्रत्यक्ष प्रभाव रहल छलनि। नाना बड़ पैघ तांत्रिक छलथिन। डोकहर मे तपस्या करैत

रहथिन। अन्तर मात्र एतबे छलनि, जे 'व्यास' जीक नाना अपन तपस्या सँ प्राप्त शक्तिक प्रयोग प्रेतक उपद्रव केर शमन करबा मे करैत छलाह आ दोसर दिशि 'व्यास' जी सभ दिन दोसरे तरहक तपस्या मे लागल रहलाह। देवता-पितर कैँ गोहराबैत माँ मैथिलीक तपस्या मे लीन। यश-अपयश, निन्दा-प्रशंसा सँ उपर साहित्य-साधना मे निमग्न 'व्यास' जी ! समाज मे आदर्श स्थापित करबाक प्रयास करैत 'व्यास' जी!

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-5

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-6

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-7

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य-६



গতাঁক সঁ আগা ......

তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্য

(পদ্ম পুরাণ উত্তরখণ্ড)

পার্রতীজীক পুছলা পব মহাদেরজী কহলনি - এহি দ্বীপ মে সর্রেক ক্লেশক নাশক দেরতা ভগরান কেশঁর তীর্থরূপ মে রিবাজমান ছথি । হম অহাঁক লেল ওহি তীর্থক রর্ণন কবৈত ছী । পহিল পুষ্কব তীর্থ অছি , জে সর তীর্থ মে শ্রেষ্ঠ আ শুভকাবক অছি । দোসব ক্ষেত্র কাশীপুবী অছি , জে মুক্তি প্রদাযনী অছি । তেসব নৈমিষ ক্ষেত্র অছি, জেকবা ঋষি লোকনি পবম পারন মানননি অছি । চাবীম প্রযাগ তীর্থ অছি, জে সরতীর্থ মে উত্তম মানল গেল অছি । পাঁচম কামুক তীর্থ অছি,জেকব উপেরি গন্ধমাদন পর্রত পব রঁতাওল গেল অছি । ছঠম মানসবোরব তীর্থ অছি , জে দেরতা লোকনিকক লেল সেহো অতি বমণীয অছি। সাতম রিশ্বকায তীর্থ অছি, জেকব স্থিতি কল্যাণময অম্বব পর্রত পব রঁতাওল গেল অছি । আঠম গৌতম নাম সঁ তীর্থ অছি , জেকব স্থাপনা পূর্রকাল মে মন্দবাচল পর্রত পব ভেল ছল । নোআম মদোৎকেট আ দশীম বথচৈত্রক তীর্থ অছি । এগাবহম কান্যকুব্জ তীর্থ অছি, জাহি ঠাম ভগরান রামন রিবাজমান ছথি । রাঁবহম মলযজ তীর্থ অছি । একব রাঁদ কর্বুজাত্রক,রিশ্বেশ্বব, গিবিকর্ণ , কেদাব আ গতিদাযক তীর্থ অছি । হিমালযক পৃষ্ঠভাগ মে রাঁচ তীর্থ , গোকর্ণ মে গোপক তীর্থ , হিমালয পব স্থানেশ্বব ,রিলুক মে রিলুপত্রক ,শ্রীশৈল মে মাধর তীর্থ , ভদ্রেশ্বব মে ভদ্র তীর্থ ,কদ্রকোটি মে কদ্র তীর্থ ,কালঞ্জব পর্রত পব পিতৃ তীর্থ ,কম্পিল মে কাম্পিল তীর্থ,রাবাহ ক্ষেত্র মে রিজয তীর্থ ,রৈষ্ণর গিবি পব রৈষ্ণর তীর্থ ,মুকুট মে ককোটক , গণ্ডকী মে শালগ্রামোদ্ভর তীর্থ, নর্মদা মে শির তীর্থ , মাযাপুবী মে রিশ্বরূপ তীর্থ , উপেলাক্ষ মে সহস্রাক্ষ তীর্থ, বৈরতক পর্রত পব জাত তীর্থ, গযা মে পিতৃ তীর্থ আ রিষ্ণুপাওদোদ্ভর তীর্থ, ব্যাস মে রিপাপ,পুণ্ড্রব রর্ধন মে পাটল সুপার্শ্ব মে নাবাযণ , ত্রিকূট মে রিষ্ণু

মন্দিব , রিপ্বন মে রিপ্বন,মনযাচন মে কন্যাণ, কোঠিতীর্থ মে কৌবর, গন্ধমাদন মে স্বগন্ধ , ক্বর্ঁজাঙ্ক মে ত্রিসন্ধ্য , গঁগাদ্বাব মে হবিপ্রিয , রিন্ধ্য প্রদেশী মে শৈন তীর্থ, বঁদবিকাশ্রম মে শ্বভসাবস্বত তীর্থ , কানিন্দি মে কানকপ, সহ্য পর্রত পব সাহ্যক খা চঁদ্র প্রদেশী মে চঁদ্র তীর্থ খছি ।

মহাকান মে মহেশ্বব তীর্থ , রিন্ধ্য পর্রতক কন্দবা মে খভযদ খা খমৃত নাম সঁ তীর্থ , প্রচণ্দা মে রৈগনেঠ তীর্থ ,খমবকণ্টক মে চণ্ডী তীর্থ , প্রভাস ক্ষেত্র মে সোমেশ্বব তীর্থ , সবস্বতী মে পাবারত তঠ পব দেরমাহ তীর্থ , মহাপদ্ম মে হানয তীর্থ , পযোষ্ঠী মে নিশ্চনেশ্বব, সিহিঁকা খা সৌবর মে বরি তীর্থ খছি । প্তত্তিকাক্ষেত্র মে কার্তিক তীর্থ , শঙ্কবগিবি পব শঙ্কব তীর্থ , স্বভদ্রা খা সম্বদ্রক সঁগম পব দিব্য উঁপ্পেন তীর্থ , রিষ্ণু পর্রত পব গণপতি তীর্থ , জানন্ধব মে রিশ্বমুখ তীর্থ , তাব র রিষ্ণুপর্রত পব তাবক তীর্থ , দেরদাকরন মে পৌণ্ড্ব তীর্থ , কাশমীব মণ্ডন মে পৌষ্ক তীর্থ , হিমানয পব ভৌম , হিম,তষ্ঠিক খা পৌষ্ঠিক তীর্থ , মাযাপ্বব মে কপানমোচন তীর্থ, শঙ্খোদ্বাব মে শঙ্খধাবক দের, পিণ্ড মে পিণ্ডন , সিদ্ধি মে রৈখনস খা খচ্ছোদ সবোরব পব রিষ্ণুকাম তীর্থ খছি, জে ধর্ম ,খর্থ, কাম খা মোক্ষ প্রদাযনী খছি । উঁত্তবকন্দ মে ঔষধ্য তীর্থ, ক্বশদ্বীপ মে ক্বশোদক তীর্থ , হেমকুঠ মে মন্মথ তীর্থ ,ক্বম্বদ মে সহরাদন তীর্থ, রদস্তী মে খাশমক তীর্থ , রিন্ধ্য পর্রত পব রৈমাহক তীর্থ খা চিত্তমে ব্রঁবহ্মময তীর্থ খছি, জে সর তীর্থ মে পারন মানন গেন খছি । হে স্বন্দবী ! এহি সর তীর্থ মে উঁত্তম তীর্থক রর্ণন স্বন্ব । ভগরান্ রিষ্ণুক নামক সমতা কবহ রানা নহি তহ কোনো তীর্থ ভেন খছি খা নহি হোযত । ভগরান্ কেশ্বক প্তপা সঁ স্নানকব নাম নেশী মাত্র সঁ ব্রঁবহ্মহত্যোবা, স্বরর্ণ চুবারহ রানা , রাঁনঘাতী খা গো হত্যাবা প্ত্বরুষ সেহো পাপ ম্বক্ত ভহ জাযত খছি । কনযুগ মে দ্বাবকাপ্ববী পবম বমণীয খছি খা ওহি ঠামক দেরতা ভগরান্ প্তষ্ণ পবম ধন্য ছথি । জে কেও ওহি ঠাম জা কে স্নানকব দর্শন কবৈত ছথিন , স্নানকা খরিচন ম্বক্তি মিনৈত চৈন । মহাদেরী ! এহেন পবম ধন্য দেরতা সর্রেশ্বব প্রভ্ত শ্রীরিষ্ণু ভগরান্ক হম নিবন্তব চিন্তন কবৈত বহৈত ছী । এহি প্রকাব এহি ঠাম কতেকো তীর্থক নামোন্নেখ কএন গেন খছি। জে কেও একব জপ কবৈত খছি র স্বনৈত খছি , ও সর পাপ সঁ ম্বক্ত ভহ জাযত খছি । জে কেও এহি তীর্থ মে স্নান কহ পাপহাবী ভগরান্ নাবাযণক দর্শন কবৈত ছথি , ও সর পাপ সঁ ম্বক্ত ভহ ভগরান্ রিষ্ণুক সনাতন ধাম চনি জাযত খছি । জগন্নাথপ্ববী মহান্ তীর্থ খছি । ও সর নোক কেব পরিত্র কবহরানী মানন গেন খছি । জে শ্রেষ্ঠ নোকনি ওহি ঠামক যাত্রা কবৈত

ছথি, হ্মনকা পবম গতি মিনৈত ছৈন । জে শ্রাদ্ধ কর্ম মে এহি পবম পরিত্র তীর্থক নাম স্বনারৈত ছথি, ও এহি নোক মে স্বখ ভোগি ভগরান্ রিষ্ণুক সনাতন ধাম জাযত ছথি ।

মহাদের জী ঋাগ্ন কহৈত ছথিন - স্বন্দবি ! ঋার হম রেত্ররতী নদীক মাহাত্ম্যে রতাযর , স্বন্ব ! ওহি ঠাম স্নান কবনা সঁ মান্বষ ম্বক্তি পারি নৈত ছথি । পূর্র কান মে বৃত্রাস্বব একঠা পৈঘ গহীঁব ভনাব খূনেনে ছনাহ , জেকব নাম মহাগঁভীব ছন । ওহি ভনাব সঁ ঋ দিরা নদী প্রকঠ ভেন ঋছি । রেত্ররতী নদী সর পাপক নাশী কবহ রানী ঋছি । গঁগা জী সন ঋহ্ম শ্রেষ্ঠ নদীক মাহাত্ম্যে ঋছি । এহি নদীক দর্শন মাত্র সঁ সমস্ত পাপ বাশি শীন্ত ভহ জাযত ঋছি । রঁড়ড প্ববান রাঁত ঋছি , চম্পক নগব মে একঠা বাজা বাজা কবৈত ছনাহ । ও রঁড়ড দ্বষ্ঠ ঋা প্রজা নোকনি কেব দ্বঃখ দৈত ছনাহ । ও নীচ ঋধর্মক মূর্তিমান্ স্বকপ ছনাহ । ও নিবন্তব ভগরান্ রিষ্ণুক নিন্দা কবৈত ছনাহ , দেরতা ঋা ব্রঁাহ্মণ কেব ঘাত নগারৈত বহৈত ছনাহ ঋা ঋাশ্রম কেব কনঁকিত কবৈত ছনাহ । ও মূর্খ রেদক নিন্দা মে প্ররৃত্ত , নির্দযী, শঠ , ঋসত্য শাস্ত্র মে ঋন্ববাগ বাখহরানা ঋা পবাযী স্ত্রী কেব দ্বষিত কবহ রানা ছনাহ । হ্মনক নাম রিদাকণ ছন । ও ঋতি পাপী ছনাহ। মহান্ পাপ ঋা ব্রঁাহ্মণক নিন্দা কবনাক কাবণ বাজা রিদাকণ কোঠী ভহ গেনাহ । এক দিন দৈর যোগ সঁ ও শিকাব খেনৈত ওহি নদীক কছেব মে ঋারি গেনাহ । হ্মনকা প্যাস নাগন ছন । ঘোড়া সঁ উঁতবি নদীক পানি পী নেননি ঋা ফেব বাজধানী নৌঠি গেনাহ । নদীক জন পীনা সঁ বাজাক কোঠ দূব ভহ গেন ঋা রুঁদ্ধি মে নির্মনতা সেহো ঋারি গেননি । তখন সঁ হ্মনকা হৃদয মে ভগরান্ রিষ্ণুক প্রতি ভক্তি উঁপেন্ন ভহ গেন ।ঋার ও সময-সময পব ওহি ঠাম ঋারি স্নান কবৈত ছনাহ । তাহি সঁ ও ঋতি কপরান ঋা নির্মন ভহ গেনাহ । এহি নোক মে স্বখ ভোগৈত ও কতেকো যজ্ঞ কেননি ,ব্রঁাহ্মণ নোকনি কেব দক্ষিণা দেননি ঋন্ত মে ও রৈকুণ্ঠ ধাম চনি গেনাহ ।

পার্রতী ! জে ব্রঁাহ্মণ ,ক্ষত্রীয, রৈশ্য ঋ শূদ্র রেত্ররতী নদী মে স্নান কবৈত ছথি, ও পাপ রঁন্ধন সঁ ম্বক্ত ভহ জাযত ছথি । কাতিক , মাঘ ঋা রৈশাখ মে জে রেঁব -রেঁব ওহি ঠাম স্নান কবৈত ছথি, ও সেহো কর্ম রঁন্ধন সঁ ছুঠকাবা পারি জাযত ছথি । ব্রঁবহ্মহত্যা, গোহত্যা , রাঁনহত্যা ঋা রেদ-নিন্দা কবহ রানা প্বকষ সেহো নদীক সঁগম মে স্নান কবনা সঁ পাপ সঁ ম্বক্ত ভহ জাযত ছথি । জাহি স্থান পব ঋা জাহি নদীক সাভ্রমতী (সার্রবমতী) নদীক সঁগম হোযত ঋছি,

ওহি ঠাম স্নান কবনা সँ ব্রঁবহ্মহত্যাবা সেহো পাপম্বও ভহ জাযত শ্বছি। খেষ্ঠক নাম সँ দিরা নগব এহি ধবাতনক সূক্ষ্ম শ্বছি। ওহি ঠাম কতেকো ব্রঁবাহ্মণ কতেকো প্রকাবক যোগক সাধন কেননি শ্বছি। ওহি ঠাম স্নান শ্বা ভোজন কবনা সँ মান্বষক প্বনর্জন্ম নহি হোযত শ্বছি। পার্রতী ! কনম্বগ মে রেত্ররতী নদী দোসব গঁগা সন মানন গেন শ্বছি। জে কেও স্বখ,ধন শ্বা সূক্ষ্ম চাহৈত ছথি, ও এহি নদী মে রেঁব-রেঁব স্নান কহ এহি নোক মে স্বখ ভোগি শ্বন্ত মে রিষ্ণুক সনাতন ধাম জাযত ছথি। সূর্যরঁশী শ্বা সোমরঁশী মে উঁপ্ন্ন ক্ষত্রিয রেত্ররতী নদীক তষ্ঠ পব শ্বারি ওহি মে স্নান কহ পবম শান্তি পারি নৈত ছথি। এহি নদীক দর্শন সँ দ্বঃখ শ্বা স্পর্শ সँ মানসিক পাপক নাশ ভহ জাযত শ্বছি। এহি মে স্নান শ্বা জনখণ্ড কবনা সँ মান্বষ নিঃসँদেহ মোক্ষক ভাগী হোযত শ্বছি। এহি ঠাম স্নান, জপ শ্বা হোম কবনা সँ শ্বক্ষয ফন মিনৈত শ্বছি। রাবাণসী তীর্থ মে জাকে জে ভক্তিভার সँ চঁদ্রাযণ ব্রতক শ্বন্বষ্ঠান কবৈত ছথি, শ্বা ওহি ঠাম জে প্বণ্য মিনৈত শ্বছি , ও রেত্ররতী নদী মে স্নান কবনা সँ মিনৈত শ্বছি। রেত্ররতী নদী মে জোঁ মৃত্যু ভহ জায তহ ও চত্তর্ভ্জ কপ ভহ রিষ্ণুক পবমপদ পারি নৈত ছথি। হ্বনোক মে জে-জে তীর্থ ,দেরতা শ্বা পিতব ছথি , ও সর রেত্ররতী নদী মে রাস কবৈত ছথি। মহেশ্বরী ! হম রিষ্ণু , ব্রঁবহ্মা দেরগণ শ্বা মহর্ষি - ঞা সর রেত্ররতী নদী মে রিবাজমান ছথি। জে কেও এক, দূ শ্বথরা তীন্ব সময রেত্ররতী নদী মে স্নান কবৈত ছথি , ও নিশ্চয ম্বক্ত ভহ জাযত শ্বছি।

দেরী ! শ্বার হম সাত্রমতী(সার্রবমতী) নদীক মাহাত্ম্যক যথরত্ত রর্ণন কবৈত ছী। ম্বনিশ্রেষ্ঠ কশ্যপ এহি নেন কঠিন তপস্যা কেনে ছনাহ। এক দিনক রাঁত শ্বছি , মহর্ষি কশ্যপ নৈমিষারণ্য গেনাহ। ওহি ঠাম ঋষি নোকনিকক সঁগ রার্তানাপ কেননি। তখন ঋষি নোকনি কহননি - কশ্যপ জী ! শ্বহাঁ হমবা সরহক প্রসন্নতাক নেন এহি ঠাম গঁগাজীক শ্বান্ব। প্রভো ! ও সবিতা মে শ্রেষ্ঠ গঁগা শ্বহীঁক নাম সँ প্রসিদ্ধ হোযত।

মহর্ষী নোকনিকক রাঁত স্বনি কশ্যপজী প্রণাম কহ শ্বার্রূক জঁগন মে সবস্বতী নদী নগ গেনাহ। ওহি ঠাম ও দ্বষ্কব তপস্যা কেননি। ও হমব শ্বাবাধনা মে সঁনগ্ন ছনাহ। তখন হ্মনকা হম দর্শন দেনহ্মঁ শ্বা কহনে ছনহ্মঁ - রিপ্ররব ! শ্বপনেক কন্যাণ হো ! শ্বহাঁ মনোরাঞ্ছিত রব মাঁগ্ব।

কশ্যপজী কহলনি - দেৱদেৱ ! জগৎপতে ! মহাদেৱ ! অহাঁ রব দেৱহু মে সমর্থ ছী । অপনেক মাথ পর জে পরম পৱিত্র পাপহারিণী গঁগা স্থিত ছথি , ৱিশেষ কৃপা কহু হমরা দিঅ । হম অপনেক নমন করৈত ছী ।

পার্ৱতী ! তখন হম মহর্ষি কশ্যপ সঁ কহনে ছলঁহ্ - দ্বিজশ্রেষ্ঠ ! লিঅ অপন রবদান । এ কহি হম অপন মাথ সঁ একটা জটাক সঁগ গঁগাজী দেলঁহ্ । গঁগাজীক লহু কে দ্বিজশ্রেষ্ঠ কশ্যপ খুশী ভহু অপনা স্থান চলি গেলাহ । গিবজে ! পূর্ৱকাল মে ৱিষ্ণুলোকক ওছিত বাজা ভাগিবথ হমবা সঁ গঁগাজীক যাচনা কেনে ছলাহ , তখন অনকো হম গঁগা সমর্পিত কেনে ছলঁহ্ । তৎপশ্চাত ফেৰ ঋষিলোকনিকক কহলা পর কশ্যপ জী কে গঁগা প্রদান কেনে ছলঁহ্ । এ কাশ্যপী গঁগা সমস্ত বোগ আ দোষক অপহর্তা ছথি । সুন্দবী ! কতেকো যুগ মে গঁগা সঁসাব মে জাহি জাহি নাম সঁ ৱিখ্যাত হোযত ছথি , অনকব যথার্থ ৱর্ণন করৈত ছী ; সুনু ! সত্যযুগ মে কৃতৱতী , ত্রেতা মে গিবিকর্ণিকা, দ্বাপব মে চন্দনা আ কলিযুগ মে হিনকব নাম সাভ্রমতী(সাৱঁবমতী) হোযত অছি । জে কেও সৱ দিন এহি ঠাম ৱিশেষ রূপ সঁ স্নানক লেল আরৈত ছথি , ও সৱ পাপ সঁ মুক্ত ভহু ভগৱান্ ৱিষ্ণুক ধাম জাযত ছথি ।পুনশ্চারতবণ তীর্থ মে, সবস্বতী নদী মে , কেদাব ক্ষেত্র মে আ কুরুক্ষেত্র মে স্নান কবলা সঁ জে ফল মিলৈত অছি , ও ফল সাভ্রমতী(সাৱঁবমতী) নদী মে নিত্য স্নান কবলা সঁ সৱ দিন মিলৈত অছি । কাতিকক পূর্ণিমা মে কৃতিকাক যোগ এলা পর শ্রীশৈল মে ভগৱান্ মাধৱক সমক্ষ জে ফল মিলৈত অছি ,ও সাভ্রমতী নদী মে ডুবঁকী লগেলা মিল জাযত অছি। এ নদী সৱঁসঁ শ্রেষ্ঠ আ সমস্ত জগত মে পাৱন অছি । এতৱে নহি , এ পৱিত্র আ পাপনাশিনী ভেলাক কাবণ পবম ধন্য অছি ।

দেৱেশ্বৱি ! পিতৃতীর্থ , সৱ তীর্থ সহিত প্রযাগ, মাধৱ সহিত ভগৱান্ ৱটেশ্বৱ , দশাশ্বমেধ তীর্থ আ গঁগাদ্বাব - এ সৱ হমব আজ্ঞা সঁ সাভ্রমতী নদী মে নিৱাস করৈত অছি । নন্দা, ললিতা সপ্তধাবক, মিত্রপদ , ভগৱান্ শঁকবক নিৱাসস্থল কেদাবতীর্থ, সৱ তীর্থময গঁগাসাগব, শংকুক জল সঁ ভবল কুণ্ড মে ষ্ঁবষ্বসব তীর্থ আ নৈমিষ তীর্থ সেহো হমবা আজ্ঞা সঁ সদিখন সাভ্রমতী নদীক জল মে নিৱাস করৈত অছি । শ্বেতা, ৱঁলুকলিনি, হিবণ্যমযী, হস্তিমতী আ সাগবগামিনী নদী ৱাঁর্ত্রঘ্নী - এ সৱ পিতবক অতি প্রিয আ শ্রাদ্ধক কোটিগুনা ফল দাত্রী অছি। জে কেও ওহি ঠাম স্নান আ দান করৈত অছি , ও এহি লোক মে সুখ ভোগি অন্ত মে ভগৱান্ ৱিষ্ণুক সনাতন ধাম জাযত অছি । নীলকণ্ঠ তীর্থ,

নন্দহ্রদ তীর্থ, প্বণ্যময রুদ্রমহানয তীর্থ , পবম প্বণ্যমযী মন্দাকিনী শ্বা মহানদী শ্বচ্ছোদা-ঞা সর তীর্থ শ্বা নদী শ্বরূপ রূপ সঁ সাভ্রমতী নদী মে র্হৈত শ্বছি। ধম্রতীর্থ, মিত্রপদ, রৈজনাথ, দৃষদ্বব, ক্ষিপ্রা নদী , মহাকান তীর্থ, কানঞ্জব পর্রত , গঙ্গোদ্ভুত তীর্থ, হবোদ্ভেদ তীর্থ, নর্মদা নদী শ্বা ওঙ্কাবতীর্থ - ঞা গংগা মে পিণ্ডদান সন ফনদাত্রী শ্বছি , জে মনীষী নোকনিকক কথন শ্বছি। উঞ সর তীর্থ র্ব্বক্ষতীর্থ কহারৈত শ্বছি । র্ব্বক্ষা শ্বাদি সর দেরতা নোকনি এহি সর তীর্থ সাভ্রমতী নদীক উত্তবরাঁবী ঘাটঁ পব গ্বপ্তরূপ সঁ বখনে ছথি। মাহেশ্বৃবী! এহি তীর্থক স্মবণ মাত্র সঁ পাপক নাশ ভহ জাযত শ্বছি । জোঁ ওহি ঠাম শ্রাদ্ধকর্ম কবী তহ কী কহন জায । ওঁকাব তীর্থ, পিহৃতীর্থ , কারেবী নদী, কপিনাক পানি, চণ্ডরেগা সাভ্রমতীক সংগম শ্বা শ্বমবকণ্টক - এহি তীর্থ মে স্নান কবনা সঁ কুরুক্ষেত্রক শ্বপেক্ষা সও গ্বনা প্বণ্য হোযত শ্বছি । সাভ্রমতী শ্বা রার্ত্রঘ্নী নদীক জাহি ঠাম সংগম ভেন শ্বছি, ওহি ঠাম গণেশ শ্বাদি দেরতা তীর্থসংঘক স্থাপনা কেননি শ্বছি । এহি প্রকাব হম সংক্ষেপ মে সাভ্রমতীক নদী মে তীর্থক সংগমক রর্ণন কেনহুঁ শ্বছি । রিস্তাব সঁ রর্ণন কবহ মে ৱৃহস্পতি সেহো সমর্থ নহি ছথি।

এহি তীর্থ মে যত্নে সঁ স্নান কব'ক চাহী । সরেবে তীন ম্বহূর্তক সময ভোব কহারৈত শ্বছি, তকব রাদক তীন ম্বহূর্ত কেব পূর্রাহ্ণ কহন জাযত শ্বছি এহি দ্বন্ব কান মে তীর্থ মে কএন গেন স্নান দেরতা নোকনি কেব প্রীতিদাযক হোযত শ্বছি।তপ্শ্চাত তীন ম্বহূর্ত মধ্যাহ্ণ কহারৈত শ্বছি শ্বা তকব রাঁদক তীন ম্বহূর্ত শ্বপবাহ্ণ কহারৈত শ্বছি । এহি কান মে কএন গেন স্নান, পিণ্ডদান শ্বা তর্পণ পিতবক প্রসন্নতাক কাবণ হোযত শ্বছি । তদন্তব তীন ম্বহূর্তক সময সাযাহ্ণ মানন গেন শ্বছি । এহি মে তীর্থ স্নান নহি কব'ক চাহী, ঞা বাক্ষসী রেঁনা শ্বছি, জে সর কর্ম মে নিন্দিত শ্বছি । দিন ভবি মে হুন পংদ্রহ টা ম্বহূর্ত রঁতাওন গেন শ্বছি । এহি মে শ্বাঠম ম্বহূর্ত কেব হুতপ কান মানন গেন শ্বছি । এহি সময মে পিতব কেব পিণ্ডদান কবনা সঁ শ্বক্ষয হুন মিনৈত শ্বছি । মধ্যাহ্ণ কান, নেপানক কম্বন , চাঁদী, গায, দৌহিত্র শ্বা তিন হুতপ কহারৈত শ্বছি । তীর্থরাসী নোকনি পানি মে ঠাঢ ভহ কে হাথ মে হুশ শ্বা তিনমিশ্রিত পানি শ্বাঁজ্বব মে নহ কে পিতব কেব সমর্পিত কেনা সঁ শ্রাদ্ধ মে রাঁধা নহি শ্বারৈত শ্বছি।

পার্রতী ! এহি প্রকাব হম সাভ্রমতী নদী মে নামোচাবণপূর্রক তীর্থক উন্নেখ কবৈত মহর্ষি কশ্যপ কে দেনে ছনহুঁ । কশ্যপ হমব প্রিয ভঞ ছথি , তেঁ হ্মনকা

হম ঞা পরিত্র খ্মা পাপনাশিনী গঁগা দেনে ছনহ্মঁ । মহাভাগে ! সাভ্রমতী তঠ পব ব্র্ঁবহ্মচাবিতীর্থ খ্মছি । ওহি ঠাম হম ওহি নাম সঁ স্থাপিত ছী । সমস্ত জগত'ক হিতক নেন হম ওহি ঠাম ব্র্ঁবহ্মচাবীশ নাম সঁ নিরাস কবৈত ছী । সাভ্রমতী নদীক কছেব মে ব্র্ঁবহ্মচাবীশ শির ন'গ জে কেও রিশৈষ কপ সঁ পূজা কবৈত ছথি, ও এহি নোক মে স্বখ ভোগি খ্মন্ত মে শিরধাম জাযত ছথি । জে কেও ওহি ঠাম জিতেঁদ্রিয ভার সঁ উঁপরাস কবৈত ছথি খ্মা বাতি মে ৰুকি ভঞি ভার সঁ পূজা কবৈত ছথি ,হ্মনকা হম যোগী কপ মে দর্শন দৈত ছী খ্মা হ্মনক সমস্ত মনোকামনা প্ববা কবৈত ছী । পার্রতী ! ওহি ঠাম হমব কোনো নিঁগ নহি খ্মছি , হমব স্থান মাত্র খ্মছি । জে রিদ্বদজন ওহি ঠাম ফূন , ধ্বপ খ্মা নৈরেছ্য খ্মর্পণ কবৈত ছথি , হ্মনকা নিশ্চয সর কিছু মিন জাযত খ্মছি । জে কেও এহি স্থান পব রেঁনপত্র,,ফূন খ্মা চন্দন খ্মাদি সঁ হমব পূজা কবৈত ছথি , হ্মনকা হম সর কিছু দৈত ছী । দর্শন সঁ বোগ নষ্ট ভহ জাযত খ্মছি,পূজা সঁ দীর্ঘায্ম হোযত ছথি খ্মা ওহি ঠাম সুান কবনা সঁ নিশ্চয মোক্ষক ভাগী হোযত ছথি ।

স্বন্দবী ! খ্মারঁ হম বাজখন্ধী নাম সঁ পবম খ্মদ্ভুত তীর্থক রর্ণন কবৈত ছী, সাভ্রমতী নদীক তীর্থ মে রিশৈষ রিখ্যাত খ্মছি । সূর্যরংশী মে রৈকর্তন নাম সঁ একটা বাজা বহৈত ছনাহ , জে দ্ববাচাবী,পাপাম্ম্যো,ব্র্ঁবাহ্মণ নিন্দক, গ্ববুদ্রোহী, খ্মসংতষ্ট, সর কামক নিন্দক , পব স্ত্রীক প্রেমী খ্মা রিষ্ণুক নিন্দক ছন । ও সদিখন খ্মপন প্রজা নোকনি কে পীডা দৈত ছনাহ । কিছু সময রাঁদ পাপাচাবী ভেনাক কাবণ দৈরযোগ সঁ ও কোঠী ভহ গেনাহ । খ্মপন শৈবীবক দ্বর্দশা দেখি ও রেঁব-রেঁব সোচৈত ছনাহ জে খ্মার হমবা কী কব'ক চাহী ? এহি রাঁত নহ কে সদিখন ও চিন্তিত বহৈত ছনাহ । দৈরযোগ সঁ এক দিন ও ক্রিডা কবৈত রন মে গেনাহ । ওহি ঠাম সাভ্রমতী নদীক কছেব মে ঠাঠ ভেনথি । তকব রাঁদ সুান কহ ওহি ঠামক নীক পানি পীনথি । এহি সঁ হ্মনকব শৈবীব দিরা ভহ গেন । দিরা কপ দেখি বাজা রৈকর্তন কিছু দিন বাজ ভোগ কেনথি , তকব রাঁদ হ্মনকা পবম পদ মিননিনি । তখন সঁ ও তীর্থ বাজখন্ধী নাম সঁ প্রসিদ্ধ ভহ গেন । জে কেও ওহি ঠাম সুান দান কবৈত ছথি , ও এহি নোক মে স্বখ ভোগি ভগরান্ রিষ্ণুক ধাম জাযত ছথি । জে কেও বাজখন্ধী তীর্থ মে সুান র শ্রদ্ধা ভার্ সঁ পিতবক তর্পণ কবৈত ছথি , ও পৃথ্বী পব প্বণ্যাকর্মা কহারৈত ছথি ।বাজখন্ধী তীর্থক ঞা দিরা উঁপাখ্যান জে স্বনৈত ছথি, হ্মনকা কখনহ্মঁ ভয নহি নহি হোযত ছৈন খ্মা একবা স্বননা র পঠনা সঁ সমস্ত বোগ দ্বঃখ শান্ত ভহ জাযত খ্মছি ।

******

२.३.कुमार मनोज कश्यप- लघुकथा- उस्सर



कुमार मनोज कश्यप

लघकुथा- उस्सर

लाल काका के दलान गामक चौपाड़ि बुझू...... हरदम दस लोक के जुटान आ हँसी-ठहक्का सऽ जीवंत बनल! अबैत-जाईत लोक यदि कोनो धड़फड़ी मे नहि हो तऽ एको पल लेल ओतऽ बैसय के लोभ संभरण नहिं कऽ पबैत छल। लोक कहै जे गाम मे केकरो तकबाक हो तऽ सोझे पहिने लाल काका के दलान पर चलि जाऊ, बेसी संभावना जे ओ ओतहि भेटत। तकर कारण छलै ओतऽ होई बला मनोरंजक गप्प-सड़क्का .... देश-दुनियाँ, नीति-राजनीति, हँसी-मजाक सभ समाहित केने! सभ आपसी विवाद के फैसला एतऽ चुटकी मे! कोनो काज-प्रयोजन .... छोट हो वा पैघ .... प्रारंभिक विचार-विमर्श सऽ लऽ कऽ फेहरिश्त, वित्त प्रबंध, जिम्मेदारी विभाजन सभटा एहि ठाम बैसले-बैसल भऽ जाई!

दलानक आगू मोटका झमटगर नीमक गाछ सेहो चिड़ै-चुनमुन्नी के चुहचुही सऽ भरि दिन जीवंत! गाछक छाहरि मे चौकी आ गोटेक दस-बारह दऽढ़-हथटुट्टा कुर्सी सभ बिछायल। चिड़ै-चुनमुन्नी के कलरव तऽ पहर साँझ बितैत शांत हुअ लगै; मुदा लोकक जुटान रेडियो पर प्रादेशिक समाचार सुनला के बादे उसरै! तकरा बाद बाँचि जाथि ओतहि सुतनिहार - लाल काका आ टुन्नी खबास! ओहो दुनू गप्प करैत-करैत कखन निद्रा देवी के कोर मे चलि जाईत छथि से के जानय?

से ओ दलान लाल काका के आँखि मुनिते पक्का देबाल सऽ दू फाट मे बँटा गेलै! नीमक गाछ देबालक ठीक बीचोबीच पड़ैत छलैक तैं ओकरा काटि देल गेलै। आब ने ओ देवी आ ने ओ कड़ाह! कैक बरखक बाद आई दलानक आगाँ सऽ गुजरैत डेग हठात ठमकि गेल। दलानक एक कात चौकी ओहिना छैहे मुदा ओहि पर नौ मोन गर्दा जमल! घर मे बड़का-बड़का लटकल ताला .... सगरो पसरल मकड़ाक जाल .... बाकी सुन्न-मसान! लागल लाल काका अपन छाती के बीचोबीच ठाढ़ देबाल तऽर सऽ कुहरैत बाजि रहल होथि - ' हे बताह! तों एत अनेरे कथि लै बिलमि गेलह? ..... सभ अपन-अपन दुनियाँ-दारी मे मस्त अछि; तोहूँ रहऽ ......! जाह........ अनेरे कियै अपन समय गमवैत छह...... !' व्यथित हम फिरिते रही कि टिटही के एकटा जोड़ा 'टें-टें' करैत हमरा माथक ऊपर सऽ उड़ि गेल। कि जानि ओहो हमरे जकाँ भोतिया कऽ ओतऽ पहुँचि गेल हो!

-कुमार मनोज कश्यप; सम्प्रति: भारत सरकार के उप-सचिव; संपर्क: सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023; # 9810811850 ईमेल: writetokmanoj@gmail.com

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.प्रमोद झा 'गोकुल'-कुकुर वाणी



प्रमोद झा 'गोकुल'
कुकुर वाणी

साओन भादवक समय रहै .अकास मे कारी मजीठ मेघ डवाडब कय रहल छलै आ तै पर से हवाक सिहकीक संग टिपिर टिपिर पानि परब सेहो सेहो सुरूह भ' गेल छलै ।लगै छै जेना आइ जोरगर वर्षा हेबेटा करतै ।एहन विकराल समय मे सब अपन अपन दूरा दरबज्जा पकरि लेने छल आ माल जाल सेहो बथान पर आँखि मूनि पाउज कय रहल छलै ।
एहन दुर्दिनमे सड़क ओहिना सुनसान भ' जाइ छै.सब वर्षा सँ बचैक जोगार मे लागि जाइत अछि .संयोगबश एकटा मोट डांट कुकुर पानि सँ बचैक लेल निच्छोह सड़क पर भागल जा रहल छल, आओकर पाछाँ पाछाँ एकटा अगत्ती छौंड़ा हाथ मे सटकन लेने सेहो दौड़ि रहल छल.ओइ छौंड़ा के भेलै जे ई कुकुरबा आब हमरा नै पाब' देत ।धत्त !हमर मनोरथ मने रहि जायत जे ऐ सरबा के खैंच के सटकन नै मारलौं .तैं ओ आब देखलक ने ताब समधैन के

सटकन जोर सँ घुमौलक आ खैंच के फेकलक झटहा ।संयोग एहन भेलै जे ओ झटहा लगलै कुकूरक पैछला टांग मे ।ओ जोर सँ किकिया उठल आ कैँ कैँ रुदन करैत टाँग अलगौने भागल राज दरवार दिस .

दरवार मे सर सिपाहीक चाक चौकस रहितो ओ कुकूर ककरो नै मानलकै.सब धार धार करिते रहिगेल परंच ओ जेना तेना राजाक समक्ष पहुँचिये गेल आ जोर जोर सँ ऊपर छत दिस मूहँ कय कानय लागल-उऊऊ.. कुकुरक कानब अशुभ मानल जाइत छैक तैँ दरवारी सब ओकरा पर झपटि परलाह आ लगला ओकरा दुत्कारय-भाग ..भाग ...अलच्छा नैहतन !तोरो कनैक लेल यैह जगह भेटलौ ?भगै छें कि एखने दोसरो पयर तोड़ि दियौ ? जैकि दरवारी लोकैन मारैक लेल लाठी उसाहलैन कि राजा हाथ उठाके गम्भीर स्वर मे मंत्री के आदेश दैत बजलाह -'कुकूर सँ पूछल जाय जे एकरा कोन कष्ट छैक, आ ई एना कियेक कनैये ? मंत्री आदेशक पालन करैत नम्र स्वर मे ओकरा दिस तकैत बजलाह-

-कहू कुकूर !अहाँ के कोन कष्ट अछि जे एना भोकारि पाड़ि कनै छी ?एतबा सुनिते ओ घेंट उठा आर जोर जोर सँ कानय लागल –ऊऊऊ...

-आहिरेबा !अहाँ बजबे नै करबै त' हम सब बुझवै कोना जे अहाँक कष्ट केहन अछि ? ऐ पर ओ कुकूर राजा दिस ताकि जोर जोर सँ भूकय लागल-भौं भौं भौं...

राजा हाथ ऊपर कय बजलाह -हँ आदेश अछि,अहाँ निसंकोच बाजू ! क्यो मारलक की ?

- कुकूर पुन:जोर सँ भूकय लागल -भौं भौं भौं...

-ओ बूझल ! अहाँके क्यो मारलक,सैह ने !

-कुकूर भुइयाँ पर ओंघरा के किकिया लागल-उँइई...

- के ?

- राजाक एतबा बात सुनैत देरी ओ बाहर जयवाक रस्ता दिस भुकैत विदा भेल.राजाक आदेश पाबि सिपाहिक टोली सेहो ओकर पाछाँ पाछाँ दौड़ल

.थोड़ेक दूर आगाँ बढ़लाक बाद कुकूर के वैह छौंड़ा देखाइ देलकै जे ओकरा मारने छलै.ओकरा देखितहिं ओ जोर जोर सँ भूकय लागल-भौं भौं भौं...

-कुकूरक भूकब सुनि सिपाही बाजल-यैह बालक अहाँक दुर्गति कैलैन की?उत्तर मे पुनः ओ भूकय लागल.

सिपाहीओइ बालक के पकड़ि राजाक समक्ष प्रस्तुत केलक.कुकूर सेहो ढेकी कुटैत सभा मे प्रस्तुत भेल.राजा कुकुरक दिस मुखातिब होइत पुछलखिन - की ओ यैह बालक थिकाह जे निरपराध तोरा मारलखुन ?ऊत्तर मे ओ किकिया लागल-ऊँइ ई...

-ओ.. बूझल ... यैह ओ बालक थिकाह !पुनः बालक दिस घूमि राजा कड़क स्वर मे बजलाह -अहाँक कोनो ई अपराध केने छलाह जे एना मारलियैन ?

- जी नै सरकार !बालक हाथ जोड़ि बाजल

- तखन कियेक मारलियैन ?

-कुकूर बूझि सुलभ बाल कौतुक मन मे जागल तेँ !

-अहाँ अपन अपराध स्वीकार करै छी ?

- जी !

-ई बालक अपन अपराध स्वीकार करैत छथि.हिनका केहन दण्ड देल जाय ? कुकूर दिस घूमि राजा बजलाह

-राजन ! नगरक प्रधान शिव मन्दिरक मठाधीश हिनका बना देल जाय ! मन्ष्योचित वाणी मे कुकूर बाजल

-आँइ ! हिनका अहाँ दण्ड दय रहल छियैन कि वरदान ?

- नै महाराज ! हम दण्ड दय रहल छियैन !

- से कोना ?

-पूर्व जन्म मे हमहूँ ओही शिव मन्दिरक प्रधान पुजारी छलौं.सामाजिक प्रतिष्ठा आ मान मर्यादा अनेरे दिन प्रतिदिन बढ़ैत गेल जखन कि हम ओइ जोकरक नै छलौं .गनले दिन मे हम विशाल सम्पदाक स्वामी बनि भोग विलास मे लिप्त रहय लगलौं .बिसरि गेलियै जे ई काया शिवक देल अन्न पर पोषित पालित

अछि.भक्त जनक आदर सत्कार पावि एकोहं द्वितीयो नास्ति बूझय लगलियै,तकरे परिणाम आइ भोगि रहल छी .इहो ओ पद प्रतिष्ठा आ ऐश्वर्य पावि हमरे गति के निश्चित पौताह,तैँ
प्रभुता पावि जे अनाचार आव्यभिचार करैत छथि ,आ आशन पर आसीन भय आसानी सँ सेवाभाव बिसरि मेवाभाव मे लिप्त भय जाइत छथि हुनका हमरे जकाँ वा ई कहू जे सड़क पर घुमैत बिलखैत अन्न पानि बिन नित मरैत असंख्य ककुरे जकाँ दशा होइत छनि. कुकुरवाणी सुनि सभा स्तव्ध भय गेल आ राजा अपन मूड़ी झुका लेलैन .
-प्रमोद झा 'गोकुल; दीप,मधुवनी (बिहार); फोन -9871779851

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.संतोष कुमार राय 'बटोही'- कथा समीक्षा: गंगा लाभ: मराएल जिनगी



सतोष कुमार राय 'बटोही'

कथा समीक्षा: गगां लाभ: मराएल जिनगी

१

कथा- समीक्षा

कथा : गंगा लाभ

कथा- संग्रह : मराएल जिनगी

कथाकार : कपिलेश्वर राउत

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

पहिल संस्करण : 2023

समीक्षक : संतोष कुमार राय ' बटोही '

श्री कपिलेश्वर राउत जीक कथा 'गंगा लाभ' एकटा मार्मिक कथा अछि। ई कथा कथाकार कैँ कथा-संग्रह ' मराएल जिनगी ' मे संग्रहित अछि।ई कथा हृदय कैँ करीब कहल जा सकैत अछि। नैतिक मूल्यक कोना ह्रास भऽ रहल अछि आओर बनावटी दुनिया केर सृजन कोना भऽ रहल अछि तेकर कथा राउतजी लऽकऽ पाठक केर सोझा मे ऐलाह अछि। ई कथा उपदेशात्मक सेहो कहल जा सकैत अछि। परञ्च ऐ कथा कैँ कथावस्तु यथार्थ लऽकऽ हमरा अहाँ कैँ सोचवाक लेल बेवस कऽ दैत अछि । माए सन ऐ दुनिया मे कोनो चीज नहि होयत छै। सभ किछु बिकाय छै, परञ्च मायक सिनेह आओर ममता नहि कीन सकैत छी हम-अहाँ ।

श्यामबाबू सिमरिया नहाय केर बहाने माय कैँ डुबा कऽ मारि दैत छथिन्ह आओर हुनकर नामे नतहारी सभ कैँ रसगुल्ला केर भोज खुएबै छथि। ई किरदानी दिखा रहल अछि जे नैतिक मूल्यक कतेक ह्रास भऽ रहल अछि आओर लोक मृतक वेक्ती केर नाम पर रसगुल्ला कोना कऽ खै लेल राजी भऽ जाएत अछि। गंगा स्नान सँ किछु नहि होएत छै। माय- बापक सेवा-टहल केनै पैघ गप्प छियैय। जुड़ी-शीतल मे लोक पित्तर कैँ सारा पर डाबा टैंग कऽ भरि महिना पानि दैत छथि जे पित्तर जुड़ेताह, परञ्च जिन्दा रहैत पित्तर एक लोटा पानि लेल घिघरी काटैट रहि जाएत छथि। ई देखावापन हमरा मोने नीक नहि कहल जा सकैत अछि।

राउतजी ऐ कथा केर मार्फद मनुक्खताक संवैदना कैँ खोजि रहल छथि। रिश्ता- नाताक अहमियत केर विचार पर बल दऽ रहल छथिन्ह। पाप-पुण्य केकरा कहल जाएत छै आओर देखावा की होएत छै एकर दिस इशारा कऽ रहल छथिन्ह। ई कथा घोर कलियुग केर दिस इशारा कऽ रहल छै।

२

कथा समीक्षा

कथा : मराएल जिनगी

कथा- संग्रह : मराएल जिनगी

कथाकार : कपिलेश्वर राउत

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन, निर्मली (सुपौल)

संस्करण : पहिल, 2023

कथा-समीक्षक : संतोष कुमार राय ' बटोही '

श्री कपिलेश्वर राउतजी केर ई कथा सोचै लेल मजबूर कऽ दैत अछि जे समय के नहि पकड़बै आओर अपना आपके लालबुझक्कड़ बुझबै, तँ मोहन बाबू

जकाँ जिनगी भऽ जाएत, तैं मौका कैं हाथ सँ नहि जाएइ दियौ । केकरो लेल कुविचार मोन मे नहि हेबाक चाही। जे जेहेन करम करतैथ हुनका ओहने फल भेटतै। औखन कैं दौर ज्ञानक दौर नहि छै। औखन लोक पढ़ि-लिखि कऽ नौकरी आओर रोजगार कैं खोजैत छथि, कियाक तँ पूँजीवादी अर्थवेवस्थाक जुग आबि गेल छै। औखन लोक सुखक जिनीस बटोरै मे लागल छथि। पेट सँ बेसी बैंक-बैलेंसक चिंता रहैत छै।

कथाकार राउतजी अइ कथा कैं मार्फत कहै लेल चाहैत छथिन्ह जे भाई-भैयारी मे मेलजोल रहवाक चाही। बेमानी सँ अरजल धन बेसी दिन नहि टिकैत छै। आओर अपना संतान कैं सामाजिक सिख जरूर देल जाउ। वेवहारिक ज्ञान नहि रहला सँ समाज मे ओकर कोनहु मोजर नहि रहैत छै। मोहन बाबू पढ़ा-लिखा कऽ बेटा-बेटी कैं उच्च शिक्षा तऽ देलखिहिन , परञ्च सामाजिक ज्ञान देवा मे ओ पिछैड़ गेलाह।

राउतजी परिवार मे भिनभिनौज कियाक भऽ जाएत छै एकर कारण दिस इशारा केलाथि । चुल्हि फुटौलाक बाद हृदय सेहो सिकुड़ि जाएत छै। लोक भाई-भाई यानी सहोदर कैं भुलि जाएत अछि। से अइ कथा कैं केन्द्रीय कथ्य अछि। आधुनिकताक आपा-धापी मे लोक अपन माय-बाप कैं सेवा करनै कैं बोझ समझि रहल छथि । ई सोच नीक नहि कहल जा सकैत अछि। पित्तर के सेवा करनै सबसँ पैघ पुण्यक काज थिक से हमरा-अहाँ कैं जरूर मानऽ पड़त। इतिश्री ।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.प्रणव कुमार झा-जीवन-चक्रव्यूह

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'-२० टा हाइकू

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मजदूर छी हम

३.१.प्रणव कुमार झा-जीवन-चक्रव्यूह



प्रणव कुमार झा

जीवन-चक्रव्यहू

विकल मोन मानि लै कि हारि अखन हम,
कि सीमा तोड़ि विजय पाबि अखन हम?
पराजय हल्लुक छैक, भारी छैक विजय तऽ,
मुदा कि सत्य छैक, ई जानी अखन हम ।।१।।

 विजय कि छैक सदिखन सुखक निवाला?
सघन वन मे सभ कियौ नै पाबय उजाला!
पराजय में सेहो लुकायल कत्तहु लुत्ती सन,
आशा से भरल जेना कोनो पेय प्याला।।२।।

ई जीवन बनल अछि चक्रव्यूह दोधारी,
रचलकै मोह कोनो भ्रमजाल भारी।

बुझल अछि एतय करू प्रवेश कोनाक,
मुदा नहि ज्ञात अछि निकास द्वारि।।३।।

कत्तहु हम ऐ जाल में फँसि नै जाय,
चोट खाऽ कऽ कत्तहु फेर सहि नै पाबि!
विचारक ज्वार में डगमगा रहल छी,
घूरि जाय की विजयक गीत गाबि।।४।।

नहि! घुरनाई तऽ कोनो वीरता नहि छैक,
सहज छैक परेनाई, कठिन धीरता सही छैक।
कठिन बाट चुनि, चलय निर्भय सदिखन जे,
धर्मध्वज, शौर्य केर हकदार वैह छैक।।५।।

प्रथम नहीं हम भेलहू एहि दौड़ में तऽ,
दोसर स्थान पर सदिखन रहलहू हम।
नै पेलहु सभकिछू, नै छूटल बहुत किछू,
विजय केर अंश के लऽ कऽ चललहूँ हम।।६।।

प्रयत्न से हमर नाता रहल अछि,
अभाव में सेहो हम गाबैत रहलहु अछि।
एक एकटा हारि से सीखि के निरंतर,
नवआशा ज्योति जराबैत रहलहु अछि।।७।।

हे मैया! तू ही आब हमारा ई शक्ति दे,
कि हम सभ मोह जाल से मुक्त भऽ जाय।

नै होय लक्ष्य खाली पराजय-विजय केर,
मनुषऽक हृदय में जुड़ि के जिबि हम ।।८।।

ओहि भूमि पर बनय स्थान हमरो,
जतय कर्म, करुणा, समर्पण बसल होय।
जतय लोक श्रद्धा से लेबय नाम हमर,
जतय मूल्य मानव धर्म के सजल होय।।९।।

-प्रणव कुमार झा राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नै दिल्ली

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.जगदानन्द झा 'मनु'-२० टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मनु'ु

२० टा हाइकू

१

पाइ फेक क

सब किछु भेटत

आज्ञा तँ करु

२

यादि अबैए

हमर साइकिल

दहेज बला

३

बड़ राक्षस

टेंगारी पिजा राखू

काज आएत

४

जग नापब

आब अप्पन बुते

आश केकर

५

दू पाया भेलौं

चौ पायासँ अखने

से बुझाइए

६

गृहस्थ भेषे

अहाँ ऋषि कोनो छी

हे महामना

७

पति रहिते

एकादशी करब

के कहलकै

८

पतिकेँ छोड़ि

सभकेँ पूजलक

ओ कोन व्रता

९

पतिव्रतासँ

व्रत हटा केहेन

पति पिटेला

१०

व्रता आ पति

फैशनकेँ दौरमे

एक्के लाइने

११

मोन तोरैत

हुकूम चलबैत

रानी पिशाच

१२

आदर संगे

जे मोन बुझलक

नीक स्पाउस

१३

परिवारमे

अहाँकेँ शांति अछि

तँ स्वर्गमे छी

१४

घरमे भेद

अशांत परिवार

नर्कक भोग

१५

हऽम नै कम

जेए चूप्प रहब

मास्टरनी छी

१६

मनुखपर

संगत आ रंगत

चैढ़ते छैक

१७

नूनक भाव

चाँदी चम्मच बला

कोना बुझतै

१८

किछु सम्बन्ध

नियोजन कारणे

बचल नहि

१९

भीखो भेटै छै

ओकाइत देख क

गामघरमे

२०

सब सुनलै

ओल सनक बोल

घोघे तरसँ

- जगदानन्द झा 'मनु', मोबाइल नंबर ९२१२४६१००६

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.संतोष कुमार राय 'बटोही'-मजदूर छी हम



सतोंष कुमार राय 'बटोही'

मजदूर छी हम

ईंटभट्टा पर काज केनिहार
मकान बनेनिहार
नाला साफ केनिहार
हगनी-मूतनी कैँ साफ केनिहार
मजदूर छी हम ।

होटल पर बर्तन साफ केनिहार
चाह बनेनिहार
नाश्ता बनेनिहार
ठेला पर फल बेचनिहार
मजदूर छी हम ।

घर मे गृहिणी
स्कूल मे मास्टरनी

नेनाक माय हम
मरद सँ कन्हा मिलाकऽ काज केनिहार
मजदूरीन छी हम ।

खेत मे बोइन केनिहार
रेलक टीशन केँ चमकेनिहार
फैक्ट्री मे काज केनिहार
सूअर पालनिहार
मजदूर छी हम ।

हमरे पर टिकल ई दुनिया
हमरे देखैत अछि कनखी आँखि सँ
सेवा मे किछु कमी नहि होयत
हमरो किछु अधिकार चाही
मजदूर छी हम ।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

